Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
Special Issue on Visual Culture, Performing Arts, and Social Media: An Interdisciplinary Analytical Perspective 7(8s)

INTERRELATIONSHIP AND CONTRIBUTION OF DIFFERENT GHARANAS IN THE EDUCATION SYSTEM OF PANDIT VISHNU NARAYAN BHATKHANDE

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे की शिक्षा पद्धति में विभिन्न घरानों का अंतर्संबंध एवं योगदान

Jyoti Mishra [1]

[1] Assistant Professor, Music (Vocal), Government Girls. PG. College, Banda 210001, India

Received 21 February 2026
Accepted 18 April 2026
Published 06 May 2026

CorrespondingAuthor
Jyoti Mishra, jmishra8324@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v7.i8s.2026.7721

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: The history of Indian classical music is profoundly glorious. Its origins are traced back to the Vedas. Beginning with the Samaveda and traversing through various historical epochs to the modern era, this journey has witnessed many transitions. The tradition of Indian classical music has been preserved and developed through the Guru-Shishya parampara (teacher-disciple tradition). Within this tradition, various gharanas (lineages) enriched music through their distinct styles, singing techniques, raga structures, rhythmic applications, and ornamentations (alankars). During the transition between the nineteenth and twentieth centuries, when the Indian musical tradition was in a state of fragmentation and ambiguity, Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande played a vital role in providing it with a systematic, scientific, and educationally viable framework. Bhatkhande's educational methodology was not merely theoretical; it was based on the study, comparison, and coordination of traditional musical knowledge prevalent in various gharanas. By studying the specific characteristics of different lineages, he developed a teaching system that serves as a bridge between tradition and modernity. This article examines the interrelationships and contributions of various gharanas within his educational framework. The study analyzes the technical contributions of different gharanas through primary and secondary sources. The conclusion indicates that by transforming the 'Shruti-Smriti' (oral-aural) tradition prevalent in India into a 'Lekhan-Shastra' (notational/written) tradition, Bhatkhande ji gave Indian classical music a global identity.

Hindi: इंभारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली है। इसकी शुरुआत वेदों से मानी जाती है। सामवेद से प्रारम्भ होकर इतिहास के विभिन्न कालखण्डों से होते हुए आधुनिक काल तक की यात्रा में इसने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह परम्परा गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से संरक्षित और विकसित होती रही है। इस परम्परा में विभिन्न घरानों ने अपनी विशिष्ट शैली, गायकी, राग-विन्यास, लय-प्रयोग और अलंकारो के माध्यम से संगीत को समृद्ध किया। उन्नीसवी और बीसवी शताब्दी के सन्धिकाल में जब भारतीय संगीत परम्परा बिखराव और अस्पष्टता की स्थिति में थी, तब पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे ने इसे व्यवस्थित, वैज्ञानिक और शिक्षा के लिए उपयोगी स्वरुप प्रदान का महत्वपूर्ण योगदान दिया।
भातखण्डे जी की शिक्षा पद्धति केवल सैद्धान्तिक नहीं थी, बल्कि विभिन्न घरानों में प्रचलित पारम्परिक संगीत ज्ञान के अध्ययन तुलना और समन्वय पर आधारित थी। उन्होंने विभिन्न घरानों की विशिष्टताओं का अध्ययन कर एक ऐसी शिक्षण पद्धति विकसित की जो परम्परा और आधुनिकता के मध्य सेतु का कार्य करती है। प्रस्तुत लेख में उनकी शिक्षा पद्धति में विभिन्न घरानों के अन्तर्सम्बन्ध एवं उनके योगदान का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से विभिन्न घरानों के तकनीकी योगदान का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्ष यह दर्शाता है कि भातखण्डे जी ने भारत में प्रचलित श्रुति-स्मृतिश् परम्परा को श्लेखन शास्त्रश् परम्परा में परिवर्तित कर भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक पहचान दिलाई।

How to cite this article (APA): Mishra, J. (2026). Interrelationship and Contribution of Different Gharanas in the Education System of Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 7*(8s), 153–157. doi: 10.29121/shodhkosh.v7.i8s.2026.7721

Keywords: Bhatkhande Educational System, Gharana Tradition, Standardization of Notation, Music History, Rampur-Sahaswan, भातखण्डे शिक्षण पद्धति, घराना परम्परा, स्वरलिपि मानकीकरण, संगीत इतिहास, रामपुर-सहसवान

1. प्रस्तावना

महान भारतीय संगीत के इतिहास में 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध का समय एक क्रांतिकारी काल था। मुगल शासन के पतन और स्थानीय रियासतों के बिखराव के कारण संगीत जिसे दरवारी संरक्षण प्राप्तला, वह अब असुरक्षित हो गया। उस समय संगीत का ज्ञान घरानों की निजी सम्पत्ति की भांति था, जो वंशानुगत और अत्यंत गोपनीय था। रागों के स्वरूप में एकरूपता का नितांत्त अभाव था। किसी घराने से संगीत का ज्ञान अर्जन करना अत्यत दुरुह कार्य था। ऐसे ही समय में भारत में एक महान विभूति का जन्म मुंबई (तत्कालीन बम्बई) के वालुकेश्वर में हुआ।यह महान व्यक्ति पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे थे। पण्डित जी की प्रारम्भिक शिक्षा मुंबई के एलिफिस्टन हाईसूल परेल में सम्पन्न हुयी, इसके बाद मुंबई के ही एलीफिस्टन कॉलेज से उन्होंने बी.ए. तथा एल.एल.बी. की परीक्षाएं उत्तीर्ण की। पंडित जी को संगीत का प्रारम्भिक ज्ञान अपनी माता जी से प्राप्त हुआ। पंडित जी के पिताजी को भी संगीत का अच्छा ज्ञान था उन्होंने बांसुरी वादन में निपुणता बहुत कम समय में ही प्राप्त करली थी। बाद में गोपाल गिरि बुआ नामक सितार वादक से प्रेरित होकर बल्लभाचार्य दामुल जी से सितार का ज्ञान अर्जित किया। पंडित जी ने वकालत के साथ-2 अपने संगीत ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास भी जारी रखा। उस समय मुंबई में हिदुस्तानी रागदारी को बढ़ावा देने के लिए पारसियों द्वारा एक संस्था चलाई गयी थी जिसका नाम था 'गायन उत्तेजक मंडली'। पंडित जी इस संस्था से जुड़ गये, जिससे उन्हें रावजी बुआ बेलवागकर, उस्ताद अली हुसैन खाँ, विलायत हुसैन खाँ सहित कई संगीतिज्ञों का सानिध्य प्राप्त हुआ। यही से उन्हे भारतीय शास्त्रीय संगीत को लिपिबद्ध करने, उनका मानकीकरण करने व उसे सर्वसुलभ बनाने का विचार आया।

संगीत के प्रति गहरी रूचि होने के कारण उन्होने संगीत के प्रचलित स्वरूप के पीछे के शास्त्र को जानने एवं समझने के लिए प्रचीन ग्रंथों का अध्ययन, तथा उनका अनुवाद किया। पंडित जी अत्यत्त कुशाग्र बुद्धि थे, जिससे उन्हे विभिन्न भाषाओं का ज्ञान भी अर्जित हुआ। उन्होंने के संगीत का ज्ञान अर्जन के लिए पूरे भारत का भ्रमण किया। विभिन्न घरानों ग्वालियर, आगरा, जयपुर किराना, बनारस आदि के आचार्यों से संवाद स्थापित किया और उनके गायन की परम्परायों का गहन अध्ययन किया। उन्होंने अपने जीवन में कई व्यक्तिओं से तथा घरानेदार संगीतज्ञों से संगीत की विधिवत तालीम ली। उन्होंने यह अनुभव कर लिया था कि बिना एक सुव्यवस्थित शिक्षा पद्धति और स्वरलिपि के, भारतीय संगीत का भविष्य अंधकारमय है। उन्हेंने संगीत को घरानों से निकालकर शिक्षण-संस्थाओं तक पहुंचाने का संकल्प लिया। उनके इस महती कार्य की आधारशिला विभिन्न घरानों के विद्वानों का अनुभव और उनकी बंदिशें थी। इनका उपयोग कर उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की।

2. शोध-पद्धति (RESEARCH METHODOLOGY)

इस शोध हेतु ऐतिहासिक और तुलनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है।

- प्राथमिक स्रोतः भातखण्डे जी द्वारा रचित क्रमिक पुस्तक मालिका (6 भाग) और हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति
- द्वितीयक स्रोतः विभिन्न घरानों के वंशावली दस्तावेज, पूर्ववर्ती शोध पत्र।

3. घरानों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भातखण्डे जी का दृष्टिकोण

19वीं शताब्दी के अन्त तक भारतीय संगीत मुख्य रूप से गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित था। जिसमें विभिन्न प्रकार के घराने प्रचलित थे। घराना शब्द का अर्थ है- एक विशिष्ट शैली या परम्परा, जो किसी विशेष गुरु या क्षेत्र से सम्बद्ध होती है। घरानों की अपनी गायकी, राग-विस्तार, तान-प्रयोग, लयकारी, बंदिशों और प्रस्तुति शैली की विशेषताएँ होती हैं।

उदाहरणार्थ

- ग्वालियर घराना- ख्याल गायकी की प्राचीनतम और संतुलित शैली
- किराना घराना- स्वर साधना और भींड प्रधान गायकी
- आगरा घराना- ध्रुपद अंग और बोल बाँट की विशेषता

सभी घरानों की अपनी-2 विशिष्टताएं भी किन्तु इनके मध्य पारस्परिक संवाद और समन्वय सीमित था। भातखण्डे जी ने इन घरानों के प्रति समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने देशभर की यात्राओं से और दक्षिण भारतीय मेलाकर्ता पद्धति से प्रेरणा लेकर भारतीय संगीत को शास्त्रबद्ध किया जिसमें उन घरानों से प्राप्त ज्ञान और बंदिशों का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया गया।

4. प्रमुख घरानों का योगदान एवं अन्तर्सम्बध:

पंडित जी भारतीय संगीत के हर पहलू को समझने और जानने के लिए तत्पर रहते थे किन्तु तत्कालीन समय किसी घराने से उनका ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त कठिन कार्य था। क्योंकि घरानों की परम्परा के अनुसार गुरु केवल अपने शिष्य या निकट संबंधियों को ही अपनी शिक्षा प्रदान करता था। पंडित जी ने घरानों के सांगीतिक ज्ञान को प्राप्त करने के लिए हर प्रकार का जतन किया, जिसमें उन्होंने कई घरानों का शिष्यत्व भी ग्रहण किया।

4.1. रामपुर-सहसवान एवं सेनिया परम्परा

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे को पता चला कि रामपुर दरबार के नवाब एवं यहां के संगीतज्ञ संगीत के अच्छे जानकार है। यहाँ के उस्ताद वजीर खाँ के पास तानसेन परम्परा के होरी तथा ध्रुपद है। पंडित जी ने उन्हे प्राप्त करने के लिए नवाब साहब का शिष्यत्व प्राप्त किया। जिसके बाद भातखण्डे जी ने वजीर खां साहब से सैकडो ध्रुपद और धमार प्राप्त किये। रामपुर घराने में कई विशेषताएँ थी जिन्हें पंडित जी ने न सिर्फ आत्मसात किया बल्कि उसके प्रकटीकरण के लिए नवाव और संगीतकारों को मनाया।

ध्रुपद अंग का प्रभाव: सेनिया परम्परा के बीणकारों ने रागों के आलापचारी और मींड के प्रयोगों पर विशेष बल दिया। भातखण्डे जी ने अनुभव किया कि राग की शुद्धता उसके आरोह-अवरोह से अधिक उसके चलन (Movement) में है। उन्होंने वजीर खाँ से प्राप्त शुद्ध रागों के लक्षणों को आधार बनाकर अपने लक्षण गीत लिखे। इसमें जो बंदिशें हैं, उसके शब्दों में ही उस राग की पूरी जानकारी छिपी होती है। इसमें निम्नलिखित विवरण समाहित होते हैं-

- वादी और संवादी स्वर-राग के सबसे महत्वपूर्ण स्वर।
- वर्जित स्वर- वे स्वर जिनका प्रयोग उस राग में नहीं होता।
- आरोह-अवरोह- राग के चढ़ते और उतरते क्रम के स्वर।
- गायन समय- राग को गाने का निर्धारित समय (प्रहर)
- जाति- राग में प्रयुक्त स्वरों की संख्या (जैसे-औडन, षाड़क, संपूर्ण)

अप्रकाशित बंदिशों का प्रकटीकरण- तत्समय संगीत को एक गुप्त ज्ञान की तरह रखा जाता था। भातखण्डे जी ने नवाब साहब और अन्य उस्तादों से चर्चा-परिचर्चा कर उन्हे लिपिबद्ध कराये जाने हेतु मना लिया। जिससे केवल रामपुर घराने के योगदान से ही क्रमिक पुस्तक मालिका में 400 से अधिक बंदिशों का संकलन संभव हुआ। जिनमें न सिर्फ तानसेन की बंदिशें बल्कि सदारंग एवं अदारंग की मूल रचनायों का समावेश है।

4.2. ग्वालियर घराना

ग्वालियर घराने के कई संगीतज्ञों से पंडित जी ने शिक्षा ग्रहण की। ग्वालियर घराना अपनी अष्टपदी और सीधी गायकी के लिए विख्यात है। पंडित जी के एक परम मित्र थे दत्तात्रेय केशव उर्फ दादासाहब जोशी, जिन्होंने भातखण्डे जी की पुस्तकों के प्रकाशन में तथा उनकी प्रूफ रीडिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ये पंडित जी की यात्राओं में अक्सर साथ जाते थे। दादा साहब ने कुछ ख्याल गणपतराव भीलवड़ीकर नामक गायक से प्राप्त किये थे। इनका परिचय पंडित जी से दादासाहब ने ही कराया था। भीलवडीकर साहब से ही ग्वालियर घराने की कुछ बंदिशें प्राप्त हुयीं, जिन्हें आगे चलकर पंडित जी ने क्रमिक पुस्तक मालिका में प्रकाशित कराया। इसी प्रकार एकनाथ पंडित से भी ग्वालियर घराने की कई बंदिशें प्राप्त हुयी। भातखंडे जी ने ग्वालियर घराने के विद्वानों से जो कुछ सीखा उसे उन्होंने राग संरचना के रूप में प्रयुक्त किया।

पकड़ और चलन: ग्वालियर की गायकी में राग का स्वरूप बहुत जल्दी स्पष्ट हो जाता है। भातखण्डे जी ने राग की पकड की जो अवधारणा दी, वह ग्वालियर घराने की गायन विशेषताओं से ही उपजी है।

बंदिश की प्रधानता: ग्वालियर घराने में बंदिश को संविधान माना जाता है। भातखण्डे जी ने इसी सिद्धान्त को अपनाते हुए यह प्रतिपादित किया कि विद्यार्थी को पहले बंदिश के शब्दों और स्वरों को कंठस्थ करना चाहिए, उसके बाद ही आलाप-तान की ओर बढ़ना चाहिए।

4.3. जयपुर-अतरौली एवं आगरा

पंडित जी ने जयपुर घराने के साथ-2 आगरा घराने के संगीतज्ञों से बंदिशें प्राप्त की तथा लिपिबद्ध किया। जहाँ ग्वालियर सरलता का प्रतीक है वहीं जयपुर व आगरा घराना जटिलता लिए हुए है। इन घरानों से भातखण्डे शिक्षण पद्धति को व्यावहारिक जटिलता प्राप्त हुयी।

अनवट रागों का वर्गीकरणः जयपुर घराने के उस्ताद अल्वादियाँ खाँ द्वारा गाये जाने वाले खास राग (जैसे वसंती केदार, सावनी आदि) को भातखण्डे जी ने अपनी स्वर लिपि में उतारकर यह सिद्ध किया कि उनकी पद्धति केवल सरल रागों के लिए नहीं बल्कि अत्यन्त जटिल शास्त्रीय स्वरूपों के लिए भी सक्षम है।

ताल और लय का अंतर्संबंध- आगरा घराने की बोल-बनाव और लयकारी ने भातखण्डे जी को अपनी स्वरलिपि में ताल के उपविभागों (जैसे ½ ,¼ मात्रा) को दर्शाने के लिए प्रेरित किया।

भातखडे जी ने जयपुर घराने के विद्वानों के साथ मिलकर रागों के श्वादी संवादी विवादों को सुलझाया। जयपुर घराने के प्रभाव से ही भरवा और पूर्वी जैसे कठिन थाटों के रागों को व्यवस्थित रूप मिला।

आगरा घराने की बोल-तान और नोम-तोम पद्धति का भातखण्डे जी ने बारीकी से अध्ययन किया। इन्होंने विभिन्न प्रान्तीय शैलियों (जैसे बनारस की उपशास्त्रीय शैली) से भी संदर्भ गृहण किये ताकि उनकी पद्धति सर्वग्राही बन सके।

5. भातखडे की स्वर लिपि पद्धति

घरानों की सबसे बड़ी समस्या विस्मृति और परिवर्तन थी। भातखण्डे जी ने संगीत के लिए पाठ्यक्रम के उचित शिक्षण हेतु एक सरल एवं सुगम स्वर- लिपि पद्धति का निर्माण किया। उनके द्वारा प्रचलित स्वरलिपि ही आधुनिक विद्यालयी शिक्षण का आधार है। इस पद्धति ने घरानों की मौखिक परम्परा को स्थायित्व प्रदान किया। इससे पहले उस्ताद की मृत्यु के साथ ही बहुत सारी बंदिशें समाप्त हो जाती थी। जिन्हें भातखण्डे जी ने लिपिबद्ध कर सुरक्षित कर दिया। इस लिपि को पंडित जी की स्वर मालिका पुस्तक में देखा जा सकता है। इस पद्धति को ही आज विद्यार्थी नोटेशन सिस्टम के नाम से जानते हैं। जिस प्रकार हम हिन्दी साहित्य में व्याकरण का अध्ययन करते हैं उसी प्रकार संगीत में भी लय, ताल, स्वरूपों के अपर-नीचे पन, उनके लगाने का तरीका, उनके शुद्ध- विकृत स्वरूप को समझने के लिए संगीत की स्वर लिपि का ज्ञान आवश्यक है। स्वरलिपि पद्धति जितनी सरल व सुगम होगी विद्यार्थियों के लिए वह उतनी ही ग्राह होगी, इसे पंडित जी ने बहुत पहले समझ लिया था।

6. दस थाट का सिद्धान्त

भारतीय संगीत में रागों के वर्गीकरण की प्रक्रिया प्राचीन काल से चली आ रही है। रागों के अध्ययन में सरलता, स्पष्टीकरण एवं उसके विस्तार हेतु सरलता लाने के लिए उन्हें वर्गीकृत किया गया। प्रत्येक काल में यह वर्गीकरण परिवर्तित होता रहा। भातखण्डे जी ने विभिन्न घरानों में प्रचलित रागों को एक वर्गीकरण के नीचे लाने के लिए 10 थाटों की रचना की। यह कार्य अत्यन्त चुनौतीपूर्ण था क्योकि अलग-2 घराने एक ही राग को भिन्न-2 स्वरों में गाते थे। पंडित जी ने 10 थाटों के अन्तर्गत विभिन्न रागों की उत्पत्ति मानी। उन्होंने शास्त्र और लोक रुचि के मध्य संतुलन स्थापित किया।

7. संस्थागत क्रान्ति एवं सम्मेलनों की भूमिका

भातखण्डे भी द्वारा पहली बार बड़ौदा में तत्कालीन बड़ौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड़ के सहयोग से प्रथम अखिल भारतीय संगीत परिषद का आयोजन किया गया। महाराज गायकवाड उस समय बड़ौडा में संगीत विद्यालय खोलना चाहते थे। इसके लिये उन्हें एक योग्य व्यक्ति की आवश्यकता थी। उन्होंने सभी से भातखण्डे जी के कार्यों के विषय में सुन रखा था, अतः इस विषय पर बातचीत करने हेतु उन्होने भातखण्डे जी को बड़ौदा बुलाया। उनकी बातचीत में इस बात पर चर्चा हुई कि विद्यालय में शिक्षण कार्य हेतु एक पाठ्यक्रम होना चाहिये परन्तु बहुत से राग-रागिनियों को गाने तथा अन्य सिद्धान्तों में कई घरानों में असमानता है अतः एक मानकीकृत नियम सिद्धान्तों के निर्धारण हेतु सभी घरानेदार उस्तादों, जानकारों को एक मंच पर लाना होगा तथा विचार विमर्श करना होगा। बड़ौदा नरेश इस विचार पर सहमत हो गये तथा परिणामतः प्रथम अखिल भारतीय संगीत परिषद का आयोजन बड़ौदा में महाराज की अध्यक्षता में 1916 को किया गया। जिसमें कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई तथा शोध आलेख इत्यादि पढ़े गये। इसके बाद दिल्ली में द्वितीय (1918) बनारस में तृतीय (1919) लखनऊ में चैथी (1924) तथा पाँचवी (1925) परिषदों का आयोजन किया गया। इन्ही परिषदों के परिणाम स्वरुप लखनऊ में तत्कालीन गर्वनर सर विलियम मॉरिस के कर कमलों द्वारा 'मॉरिस म्युजिक कॉलेज' (भातखण्डे संस्कृति वि०वि०) की स्थापना हुई। ये केवल संगीत परिषदें नही थी बल्कि सभी घरानों में व्याप्त भिन्नताओं, उनके निराकरण, विचार विमर्श तथा नवीन ज्ञानार्जन का माध्यम थी। इन परिषदों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा मिला। लखनऊ के मॉरिस कोलेज आफ म्यूजिक की स्थापना के पश्चात संस्थागत संगीत शिक्षण की क्रान्ति ने जन्म लिया क्योंकि भातखण्डे जी का उद्देश्य संगीत की सामूहिक शिक्षा एवं उसे सर्वजन सुलभ बनाना था। साथ ही वे चाहते थे कि उसे गरिमामयी स्थान मिले। गुरु-शिष्य परम्परा से शिक्षित घरानेदार संगीत की जटिलताओं को दूर कर आम जनता के बीच उसे प्रतिष्ठित करना उनका एक बड़ा प्रयास था। वे चाहते थे कि दूध-खून के रिश्तों से जकड़ी वह संगीत परम्परा जिस पर कुछ चुनिंदा लोगों का अधिकार था वह सबके लिये उपलब्ध हो जाये।

8. आलोचनात्मक दृष्टि

जहाँ भातरवण्डे जी के महान कृतित्व ने भारतीय संगीत को समृद्ध बनाया वहाँ उनके कुछ कार्यों की आलोचना भी की गई। कुछ लोगो ने उनके द्वारा निर्मित स्वर लिपि पद्धति को रागदारी व गायकी के लिये हानिकारक बताया और कहा कि उनकी (भातरखण्डे जी की) पद्धति गायकी को बन्धनों में बाँधने का कार्य करती है जिस पर भातखण्डे जी का तर्क था कि स्वरलिपि पद्धति केवल गायकी को एक स्वरूप प्रदान करती है एक गायक पूर्ण रूप से अपनी गायकी में अपने अनुरूप विस्तार करने व वैशिष्ट्य उत्पन्न करने के लिये स्वतन्त्र है।

9. निष्कर्ष

परिणाम स्वरुप यह कहा जा सकता है कि पं० विष्णु नारायण भातखण्डे जी का योगदान भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक क्रान्तिकारी प्रयास था। उन्होने न केवल विभिन्न घरानों से शिक्षा ली वरन घरानों की विशिष्टताओं को नष्ट किये बिना उन्हे एक व्यवस्थित शिक्षण पद्धति में समाहित किया। उनकी शिक्षा प्रणाली में ग्वालियर की सरलता एवं गम्भीरता, किराना की स्वर साधना आगरा की लयकारी और जयपुर की राग विविधता का समन्वय दिखाई देता है।

इस प्रकार भातखण्डे जी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को आधुनिक शिक्षा की दिशा में अग्रसर किया और विभिन्न घरानों की विशेषता, गायकी की शुद्धता को कायम रखते हुए उसे क्रमिक पुस्तक मालिका के माध्यम से एकीकृत व संकलित किया। उनका यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय होते हुए वर्तमान शिक्षण पद्धति की आधारशिला है और आने वाली पीढ़ियों के लिये मार्गदर्शक भी।

REFERENCES

Bakhle, J. (2005). Two Men and Music: Nationalism in the Making of an Indian Classical Tradition. Oxford: Oxford University Press. https://doi.org/10.1093/acprof:oso/9780195166101.001.0001
Bhatkhande, V. N. (1951). Bhatkhande Sangeet Shastra (1st ed.). Hathras: Sangeet Karyalay.
Bhatkhande, V. N. (2005). Kramik Pustak Malika (Part 4, 11th ed.). Hathras: Sangeet Karyalay.
Chinchore, P. N. (1966). Bhatkhande Smriti Granth. Khairagarh, M.P.: Indira Kala Sangeet Vishwavidyalaya.
Choube, S. K. (1984). Sangeet ke Gharano ki Charcha. Lucknow: Hari Madhav Sharan Prakashan.
Misra, S. (1985). Music Makers of the Bhatkhande College of Hindustani Music. Calcutta: Sangeet Research Academy.
Nagar, S. (1989). Bhatkhande's Contribution to Music. Mumbai: Popular Prakashan.
Paranjpe, S., and Sharatchandra. (1972). Sangeet Bodh. Madhya Pradesh: Hindi Granth Academy.
Ratanjankar, S. N., and Ksheersagar, D. (Trans.). (2012). Jodhpur: Rajasthan Sangeet Natak Academy.
Sharma, J. (2012). Pt. Bhatkhande ke Granthon Ka Sangeet Shikshan Mein Yogdan. New Delhi: Kanishka Publishers.
Sharma, S. (2010). Bharatiya Sangeet: Vaigyanik Vishleshan. Prayagraj: Anubhav Publishing House.